वर्ष 24, अंक 11 Sr. 426, मुंबई, नवम्बर 2025, पन्ने 24 कीमत रु. 5/-

॥ श्रीमद् प्रेम-रामचन्द्र-भद्रंकर-महोदय-पुण्यपाल-वज्रसेन-हेमभूषणसूरिभ्यो नमः ॥

बीसवीं सदी के महान् योगी पू. पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य एवं
उन्हीं के कृपापात्र चरम शिष्यरत्न जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पू. आचार्यदेव
श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. के चिंतनों को प्रसारित करने वाला मुखपत्र

अर्हद् दिव्य-संदेश

गुणानुवाद सभा दि. 14-10-2025

दूसरे अठारिये में प्रवेश दि. 20-10-2025

पुस्तक विमोचन दि. 22-10-2025

लाभार्थी बहुमान दि. 22-10-2025

-: संपादक एवं प्रकाशक :-
सुरेन्द्र जैन, C/o. दिव्य संदेश प्रकाशन Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे,
डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002.
M. 84 84 84 84 51 Correspondance Whatsapp only, Website : Divyasandesh.online

हार्दिक आमंत्रण

आज से ठीक **49 वर्ष पूर्व बाली (राज.)** की धन्यधरा पर **रत्नकुक्षिधारिणी माँ चंपाबाई** एवं **पिता श्री छगनराजजी गेनमल चोपडा** के **सुपुत्र राजमल चोपडा** ने उगती जवानी में 18 वर्ष की लघु वय में वि. सं. 2033, माघ शुक्ला-13, दि. 2-2-1977 के मंगल मुहुर्त में न्याति-नोहरा-बाली के प्रांगण में वर्धमान तपोनिधि **पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री हर्षविजयजी गणिवर्य** के वरह हस्तों से भागवती-दीक्षा अंगीकार कर बीसवी सदी के महान योगी, नमस्कार महामंत्र के बेजोड साधक **पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** का चरम शिष्यरत्व प्राप्त कर **मुनिश्री रत्नसेनविजयजी** बने थे। आज उस घटना को **49 वर्ष पूर्ण** हो रहे हैं। **राजु** में से **मुनि** बने...और अपने निर्मल बेदाग पवित्र चारित्र का पालन करते हुए गुरु कृपा के बल से क्रमशः गणि-पंन्यास व आचार्य पद से अलंकृत होकर जिनशासन की सुंदर आराधना-प्रभावना कर रहे है।

पूज्यश्री ने अपने कठोर व पवित्र चारित्र के द्वारा बाली संघ के गौरव को बढाया है।

राजु में से मुनि और मुनि में से आचार्य पदालढ हुए मरुधर रत्न, गोडवाड के गौरव, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पूज्यपाद **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** के संयम जीवन के स्वर्णिम वर्ष—**50 वें वर्ष** में मंगल प्रवेश की मंगल घडी में साक्षी बनने के लिए श्री ओसवाल जैन संघ-बाली की ओर से **दि. 27 जनवरी 2026 से 31 जनवरी 2026** तक भव्य जिन भक्ति-गुरुभक्ति व साधर्मिक भक्ति के त्रिवेणी संगम रुप पंचाह्निक-महोत्सव का भव्य आयोजन किया है।

इस पावन प्रसंग पर बाली नगर वासियों को एवं समस्त गुरु भक्तों को पधारने के लिए भावभरा हार्दिक आमंत्रण है।

—: निवेदक :—

श्री ओसवाल जैन संघ-बाली,

स्टे. फालना, (राज.)

रत्न संदेश

लेखक :-
प्रवचन प्रभावक पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

517

सुख की परीक्षा

आदमी हर चीज की परीक्षा करता है । नकली छोड़कर असली पसंद करता है, जब कि आश्चर्य है कि सुख के विषय में गुमराह हो जाता है, आत्मिक और आध्यात्मिक वास्तविक सुख के बजाय वह शारीरिक और भौतिक नाशवंत और क्षणिक सुख को ही सच्चा सुख मान लेता है और उसी को पाने के लिए प्रयत्नशील रहता है ।

518

भावों की पुष्टि

मोक्ष और मौत को हमेशा याद करो । मोक्ष की स्मृति से संवेग भाव की पुष्टि होगी और मौत की स्मृति से निर्वेद भाव की पुष्टि होगी । संवेग और निर्वेद भाव के स्पर्श बिना आत्मा में सम्यक्त्व के परिणामों का स्पर्श नहीं हो पाता है । सम्यक्त्व के अभाव में की गई आराधना विशेष फलदायी नहीं होती है ।

जनवरी 2025 से दिसंबर 2025 तक दिव्यसंदेश मासिक के वार्षिक सहयोगी

मुख्य-सहयोगी

- **अ.सौ. सायरबाई बसंतीलालजी हस्तीमलजी चोपडा**-बाली-निगडी
- **एक सद्गृहस्थ**-कांदिवली-बाली

सहयोगी

- **स्व. बदामीबाई चम्पालालजी राठोड़ (हस्ते राकेशभाई)** बाली, ईरोड़
- **मुनि स्थूलभद्रविजयजी** की प्रेरणा से **अ.सौ.मंजुला हसमुखलालजी महेता** मुंडारा-भायंदर
- **स्व. मातुश्री रतनबाई जिन्नालालजी** फागणिया-लुणावा

पूज्यश्री से पत्र सम्पर्क : प.पू. आचार्य श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी** म.सा.
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे.व्यु. बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. Cell 84 84 84 84 51 (only whatsapp)
विहार में संपर्क सूत्र : सहदेव 98672 04942

ऐसे थे गुरुदेव हमारे

बीसवीं सदी के महान योगी, नमस्कार महामंत्र के अजोड साधक,
निःस्पृह शिरोमणि, प्रशांतमूर्ति पूज्यपाद पंन्यास प्रवर

श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य

संपादक : जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पूज्य आचार्यदेव

श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी महाराज

4 वाचनाओं के कतिपय अंश

–वाचना दाता : पू.आ. श्री कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा.

❖ वि.संवत् 2015 में **मुनि पद्मविजयजी म.सा.** को कैन्सर की भयंकर बीमारी थी। उस समय भी उनकी शिकायत थी कि मुझ से कोई आराधना नहीं हो सकती।

पू.पं. भद्रंकरविजयजी महाराज ने आउर पच्चक्खाण में से एक गाथा निकालकर बताई - ''आया मे दंसणं, आया मे नाणं'' मेरी आत्मा ही दर्शन-ज्ञान-चारित्र आदि है।

''अब आत्मा पर ध्यान केन्द्रित करें। देह सम्बन्धी विचार को त्याग कर आत्मा को लक्ष्य बनायें।'' मैं कोई आराधना नहीं कर सकता। यह निराशाजनक बात भूल कर उत्साह उत्पन्न करें।

चौबीस घंटे में हमें अपनी आत्मा कितनी बार याद आती है ? क्या पांच मिनिट भी आत्मा याद आती है ?

''हूं कर्ता पर भाव नो, एम जिम जिम जाणे;
तिम तिम अज्ञानी पडे, निज कर्मने घाणे।''

पर-भाव का कर्तृत्व दूर करना है। शुद्ध आत्म द्रव्य का चिन्तन करके उसमें प्रतिष्ठित होना है।

''शुद्धात्मद्रव्यमेवाहं शुद्ध ज्ञानं गुणो मम।''

यद्यपि ये निश्चयनय की बातें हैं, व्यव्हार का क्रियाकाण्ड उस निश्चयनय का ही पोषक है, परन्तु कठिनाई यह है कि हम निश्चय को सर्वथा भूल गये हैं। इसीलिए संथारा पोरसी में नित्य शुद्ध आत्म-द्रव्य को याद करने का ज्ञानियों का फरमान (आदेश) है।

''एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसण संजुओ।''

''देह मन-वचन पुद्‌गल थकी, कर्मथी भिन्न तुझ रूप रे;
अक्षय अकलंक छे जीवनुं, ज्ञान आनन्द स्वरूप रे...''

ज्ञान एवं आनन्द स्वरूप आत्मा को नहीं जानना, देह को ही आत्मा मानना मिथ्यात्व है।

❖ `ज्ञानसार' में प्रथम अष्टक में पूर्णता बताई । पूर्णता अपना लक्ष्य है । पूर्णता कैसे प्राप्त हो ? पूर्णता तन्मयता से प्राप्त होगी । तन्मयता कैसे मिलेगी ? स्थिरता से मिलेगी । स्थिरता कैसे मिलेगी ? स्थिरता मोह-त्याग से मिलेगी और मोह-त्याग कैसे मिलेगा ? ज्ञान से मिलेगा ।

इस प्रकार बत्तीस अष्टकों में आपको कार्य-कारण भाव संकलित देखने को मिलेगा ।

❖ पू.पं. भद्रंकरविजयजी म. कहते थे - ``आपको क्या बनना है ? विद्वान या गीतार्थ ? मेरा परामर्श है कि विद्वान नहीं, गीतार्थ बनने का मनोरथ करें ।''

यद्यपि भगवान की करुणा तर्क से नहीं बैठती, हृदय से बैठती है । कर्म का अमुक क्षयोपशम हुआ हो तो ही समझ में आये ।

यह भी सोचें कि दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् अपना निर्वाह चलता है, यह किसका उपकार है ? भगवान का ही उपकार है । इसमें प्रभाव काम करता है । आगे बढ़कर कहूं तो समग्र विश्व पर नाम आदि के द्वारा भगवान उपकार करते हैं ।

`नामाऽपि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।'

प्रभु ! आपका नाम भी संसार से प्राणियों की रक्षा करता है । **–कल्याणमन्दिर**

इसमें नाम उपकार करता है, प्रभु कहां आये ? यह मत पूछना । आखिर नाम किसका है ? भगवान का ही नाम है न ?

अब यह समझे कि हमें यह मानव-जन्म, नीरोगी शरीर आदि भगवान की कृपा से ही मिले हैं ।

❖ ऐसी बातें **पू.पं. भद्रंकरविजयजी महाराज** ने तीन वर्ष तक घूंट घूंट कर समझाई हैं । हमारा संघ ऐसा पुण्यशाली है । फिर भी कुछ कमी हो तो इस तत्त्व की कमी है, ऐसा **पू.पं. भद्रंकरविजयजी म.** कहते थे ।

ऐसे उपकारी भगवान है । इसीलिए तो दिन में सात बार चैत्यवन्दन करते हैं, प्रत्येक चौमासी में देववन्दन करते हैं, लोगस्स में नाम लेकर याद करते हैं । लोगस्स में तो गणधर जैसे भी भगवान के पास प्रार्थना करते हैं **``आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवर मुत्तमं दिंतु ।''** अर्थात्–``हे भगवान् ! मुझे आरोग्य, बोधिलाभ एवं समाधि प्रदान करें ।''

सर्वोत्कृष्ट ('वर' अर्थात् सर्वोत्कृष्ट) समाधि की याचना यहां की गई है । इसका अर्थ यह हुआ कि यह सूत्र समाधि-प्रदाता है । इसीलिए पूज्य पं. श्री भद्रंकरविजयजी म. इसे समाधि सूत्र कहते थे ।

समाधि प्राप्त करनी हो तो बोधि चाहिये ।

बोधि प्राप्त करनी हो तो आरोग्य (भाव आरोग्य) चाहिये ।

उत्तराध्ययन सूत्र में प्रश्न है कि ``प्रभु के कीर्तन आदि से क्या मिलता है ?''

उत्तर : मिथ्यात्व का क्षय होता है, बोधि का लाभ होता है और समाधि प्राप्त होती है ।

❖ अपने लिए क्षान्ति, मृदुता, ऋजुता एवं मुक्ति इन चारों का सेवन करना चाहिये । अन्य

जीवों के साथ मैत्री आदि चार भावनाओं का सेवन करना चाहिये । क्षान्ति आदि स्व-सम्बन्धी हैं, मैत्री आदि पर सम्बन्धी हैं ।

❖ **पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी महाराज** अनेक बार कहते, `लो, ये सुवाक्य डायरी में लिख लो ।'

उस समय सामान्य लगने वाले अनेक सुवाक्य, श्लोक आज अमूल्य खजाना प्रतीत होता है ।

उन्हों ने एक श्लोक दिया था, **'शोभा नराणां, प्रिय सत्य वाणी ।'**

इस श्लोक पर वांकी में नौ दिनों तक व्याख्यान चले थे । चार माताऐं, नवपद आदि अनेक पदार्थ उनमें से निकले थे ।

❖ बचपन में हम जो नवकार, पंचिदिय, इच्छकार, लोगस्स आदि सीखे थे वे व्यर्थ नहीं समझें । अत्यन्त रहस्यमय हैं ये सूत्र !

नवकार में आये पंच परमेष्ठियों का ही इस सूत्रों में विस्तार है । कौन समीप, कौन दूर ? इसका निर्णय कौन करेगा ? सुलसा दूर थी, तो भी निकट थी । गोशाला निकट था तो भी दूर था ।

पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म. की अन्तिम अवस्था थी । हम अन्त में उन्हें पाटण में मिले । पूज्यश्री का स्वास्थ्य देखकर यों तो रुक जाने की ही इच्छा हुई, परन्तु वि. संवत् 2036 का बेड़ा का कार्यक्रम निश्चित हो गया था, अतः जाना पड़ा । बेड़ा से लौटते समय प्रथम मासिक तिथि पाटण में थी । अन्य सभी भक्त रूदन कर रहे थे और कहते थे - अब क्या होगा ? परन्तु मैंने कहा - 'पू. पंन्यासजी म. गये, यह बात ही मिथ्या है । वे तो भक्तों के ह्रदय में बिराजमान हैं ।'

विशेषावश्यक में लिखा है कि ``जिस शिष्य के ह्रदय में गुरु हैं, उसको कभी वियोग होता ही नहीं है ।'' गुरु की सभी शक्ति वैसे शिष्य में संक्रान्त हो जाती है । यही बात भगवान पर भी लागू पड़ती है ।

भक्त को अनुभव होता है कि भगवान मुझे बुला रहे हैं, मेरा आलिंगन कर रहे हैं । प्रभु मेरे अंग-अंग में फैल रहे हैं ।

उपा. यशोविजयजी का यह स्वानुभव असत्य तो नहीं होगा ।

पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म. भले भौतिक देह से उपस्थित नहीं है, परन्तु वे गुण-देह से उपस्थित हैं । भौतिक देह तो भगवान का भी स्थिर नहीं रहता ।

भरतक्षेत्र के मनुष्यों का क्या ? ऐसे प्रश्न के उत्तर में सीमंधर स्वामी ने इस शाश्वत गिरिराज को परम आलम्बन-भूत गिनाया है ।

इस गिरि की स्पर्शना, अर्थात् अनन्त सिद्धों की स्पर्शना ।

गिरिराज पर मन्दिरों की श्रेणि अर्थात् केवलज्ञान रूपी लक्ष्मी का स्थान (आवास: केवलश्रीणाम्) कहा है । यहां पूजा करने वाला गृहस्थ दरिद्र नहीं होता ।

अनेक व्यक्ति कहते हैं–जैन लोग इतने धनाढ्य क्यों हैं ? वे जान लें कि **``जैन लोग भगवान की पूजा छोड़ते नहीं हैं ।''** पूजा नहीं छूटती वहां से लक्ष्मी भी नहीं छूटती । पूजा पुण्य का परम कारण है । लक्ष्मी पुण्य से बंधी हुई है । (क्रमश:)

महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा

-: लेखक :-

पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय

रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

वीर प्रभु के प्रथम शिष्य

लब्धि निधान श्री गौतमस्वामी

दीक्षा पर्याय–50 वर्ष ⌘ आयुष्य–92 वर्ष ⌘ निर्वाण–वीर संवत् 12

समवसरण में चढते समय इन्द्रभूति ने बाघ के पास मस्ती से निर्भय होकर बैठी हुई गाय को देखा। नेवले के पास बैठे हुए सांप को देखा। बिल्ली के पास बैठे हुए चुंहे को देखा। बाघ के पास बैठे हुए मृग का देखा।

इन्द्रभूति ने देखा, ***'ये सारे पशु-पंखी भी आपसी वैरभाव से मुक्त होकर जिसकी वाणी का एकाग्रचित्त से श्रवण कर रहे है, सचमुच, यह महान् व्यक्ति ही होना चाहिए।'***

उसके बाद इन्द्रभूति ने रत्नों से निर्मित तीसरे गढ में प्रवेश किया और आतपत्र की भांति विशाल अशोक वृक्ष देखा।

उस अशोक वृक्ष के मूल में रत्न जडित स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान महावीर प्रभु को देखा। वीर प्रभु को देखकर उन्होंने अपनी आंखों को पवित्र किया।

वीर प्रभु के दर्शन के पूर्व इन्द्रभूति की दृष्टि मिथ्यात्व से ग्रस्त थी, परंतु प्रभु के दर्शन के साथ ही उनकी दृष्टि सम्यग् हो गई।

यज्ञ मंडप से बाहर निकलते समय इन्द्रभूति ने जो प्रतिज्ञा की थी कि **'मैं इसे हराकर शीघ्र ही वापस लौटता हूँ'** प्रभु दर्शन के साथ ही उनकी यह प्रतिज्ञा शिथिल होने लगी और वे प्रभु की वाणी का अमृतपान करने लगे।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

ज्ञानातिशय आदि चार अतिशयों से युक्त भगवान महावीर परमात्मा शुक्ला एकादशी के शुभदिन महसेन वन के समवसरण में तीर्थ की स्थापना के लिए पधारे थे।

इन्द्रभूति को अपने सन्मुख आए देखकर महावीर प्रभु ने इन्द्रभूति को संबोधित करते हुए कहा, **'हे इन्द्रभूति ! तुम सुखपूर्वक आए हो ?'**

प्रभु के मुख से अपने नाम का श्रवण करते हुए इन्द्रभूति एकदम चौंक उठे ।

इन्द्रभूति सोचने लगे, **'अहो ! यहां तो मैं सर्वथा अपरिचित हूँ' तो ये मेरा नाम कैसे जान गए ?'**

फिर सोचने लगे, 'लोक में मेरी प्रसिद्धि गौतम के नाम से ही है । सभी लोग मुझे गौतम कहकर ही बुलाते है । यद्यपि मेरा नाम इन्द्रभूति है, परंतु यह नाम तो विरले लोग ही जानते है । तो इनको मेरा यह नाम कैसे पता चला ?'

यज्ञ मंडप से निकलने के बाद यहां आते हुए मैंने इनके बाह्य ऐश्वर्य को देखा है और यहां आने के बाद 'हे इन्द्रभूति ! तुम सुख पूर्वक आए हो ?' इस वचन से उनकी सर्वज्ञता सिद्ध हो जाती है ।

हाँ ! देवताओं के सान्निध्य से बाह्य ऋद्धि-सिद्धि और वैभव तो किसी को भी सुलभ है परंतु आत्मनिष्ठ सर्वज्ञता की प्राप्ति तो अत्यंत ही दुर्लभ है ।

फिर इन्द्रभूति सोचते हैं, ***'अज्ञात ऐसे मेरे नाम के उच्चारण मात्र से इनकी सर्वज्ञता सिद्ध नहीं हो सकती । मेरे नाम का उच्चारण तो कर्ण पिशाचिनी विद्या को सिद्ध करनेवाला कोई भी साधक कर सकता है । हाँ ! मेरे मन के भीतर रही हुई शंका को जान सकता तो मैं मानूं कि ये सर्वज्ञ है ।'***

इन्द्रभूति अपने मन में इस प्रकार विचार कर ही रहे थे, तभी भगवान महावीर ने कहा, **'हे गौतम ! तुम मेरी सर्वज्ञता में संशय मत करो ।'**

तुम्हारे मन के भीतर रहे संशयों को मैं जान सकता हूँ ।

जिस प्रकार पीलिये के रोगी को सफेद वस्तु भी पीली दिखाई देती है, उसी प्रकार मोह (अज्ञान) के कारण वेद वाक्यों में तुम्हें विरुद्ध अर्थ दिखाई देता है ।

हे गौतम ! तुम्हारे मन में आत्मा के अस्तित्व के बारे में तीव्र संदेह है । इस संसार में जीव नाम का पदार्थ है या नहीं ? इस शंका से तुम्हारा मन डांवाडोल हो रहा है ।

तुम यह मानते हो कि–

'इस दुनियाँ में आत्मा नाम का पदार्थ ही नहीं है, क्योंकि वह किसी भी प्रमाण से सिद्ध नहीं हो रहा है ।

दुनिया में किसी भी वस्तु को जानने-समझाने के लिए चार प्रमाण बतलाए है । (1) प्रत्यक्ष प्रमाण (2) अनुमान प्रमाण (3) उपमान प्रमाण (4) आगम प्रमाण ।

प्रत्यक्ष प्रमाण से आत्मा की असिद्धि

(1) आकाश पुष्प की तरह आत्मा किसी भी इन्द्रिय से ग्राह्य नहीं है । आत्मा न तो आंख से दिखाई देती है और न ही अन्य किसी इन्द्रिय से उसे जान सकते है ।

अनुमान से आत्मा की असिद्धि

धुएं और अग्नि का परस्पर संबंध है ! जहां जहां धुआं होता है, वहां वहां अग्नि अवश्य होती है ।

धुएं व अग्नि के संबंध को जो जानता हैं, वह पर्वत पर धुएं को उड़ता हुआ देखकर वहां अग्नि होने का अनुमान करता है । परंतु आत्मा के अस्तित्व का कोई चिह्न ही दिखाई नहीं देता है तो आत्मा को कैसे सिद्ध कर पाएंगे ?

आगम प्रमाण से आत्मा की असिद्धि

अतीन्द्रिय स्वर्ग-नरक आदि पदार्थों के विषय में आगम को प्रमाण माना जाता है परंतु उन अतीन्द्रिय पदार्थों को देखनेवाला आप्त पुरुष कोई दिखाई नहीं देता है, अतः आत्मा को देखनेवाला कोई पुरुष नहीं होने से ये आगम वचन भी प्रमाणभूत नहीं है ।

सभी दर्शनों के आगम भी आत्मा के विषय में भिन्न भिन्न मत बताते है ।

1) नास्तिक मत का प्रवर्तक बृहस्पति पांच भूतों से अतिरिक्त आत्मा को मानता ही नहीं है ।

2) वेद में भी कहा है, **'विज्ञानघन एव एतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय तान्येवानुविश्यति न च प्रेत्य संज्ञाऽस्ति ।'** इस वेद वाक्य से भी आत्मा का नास्तित्व सिद्ध होता है ।

'पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और आकाश रूप पांच भूतों के एकत्रित होने पर उसमें से आत्मा नाम का पदार्थ उत्पन्न हो जाता है और उन भूतों के नष्ट होने पर आत्मा भी नष्ट हो जाती है, अतः परलोक में जानेवाली कोई स्वतंत्र आत्मा नहीं है ।

3) कुछ बौद्ध दर्शनवाले इस संपूर्ण जगत् को शून्य रूप ही मानते है । कुछ बौद्ध आत्मा को क्षणिक मानते हैं अर्थात् आत्मा उत्पन्न होती है और क्षण बाद नष्ट हो जाती है ।

इस प्रकार आत्मा के विषय में सभी दर्शनों की भिन्न भिन्न मान्यताएं होने से आगम प्रमाण से भी आत्मा का अस्तित्व सिद्ध नहीं होता है ।

दूसरी ओर वेद के अन्य वाक्य से आत्मा का अस्तित्व सिद्ध होता है । जैसे कि वेद में कहा है, ***'स्वर्ग की इच्छावाले को अग्निहोत्र यज्ञ करना चाहिए ।*** यह वाक्य आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध करता है । यदि आत्मा ही न हो तो स्वर्ग की प्राप्ति किसको होगी ?

किसी आगम में आत्मा को अकर्त्ता, निर्गुणी, अभोक्ता और ज्ञान स्वरूप कहा है ।

इस प्रकार भिन्न भिन्न मंतव्य होने से आगम भी प्रमाणभूत नहीं है ।

उपमान प्रमाण से आत्मा की असिद्धि

आत्मा की सिद्धि करनेवाला अन्य कोई आत्म सम पदार्थ जगत में विद्यमान हो, ऐसा कोई दिखाई नहीं देता हैं, अतः उपमान प्रमाण से भी आत्मा की सिद्धि नहीं होती है ।'

इतना कहकर भगवान महावीर ने गौतम को कहा, **'हे गौतम ! परस्पर विरुद्ध अर्थ बतानेवाले वेदवाक्यों के कारण तुम्हारे मन में आत्मा के अस्तित्व के विषय में संदेह रहा हुआ है ।'**

वर्षों से अपने मन के भीतर रहे हुए आत्मा के अस्तित्व विषयक संदेह को महावीर प्रभु के मुख से जानकर गौतम के आश्चर्य का पार न रहा ।

उन्होंने सोचा, `सचमुच ये सर्वज्ञ है । मेरे मन के भीतर शल्य की भांति जो संदेह था, वह संदेह इन्होंने बता दिया ।

प्रतिष्ठा के लोभ से आज तक मैंने अपना संदेह कभी किसी को प्रकट नहीं किया था, परंतु इनसे मेरा कुछ भी छिपा हुआ नहीं है । वास्तव में ये ही सर्वज्ञ है । आज इन्हीं से मेरा तत्त्व-निर्णय होगा ।'

गौतम के मन में भगवान महावीर की सर्वज्ञता का दृढ निर्णय हो चूका था, अब उन्हें लेश भी संदेह नहीं था कि महावीर प्रभु सर्वज्ञ नहीं है ।

गौतम के इस मानसिक निर्णय को जानकर जगत् में आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए भगवान महावीर ने अत्यंत ही मधुर वाणी से गौतम को कहा,

`हे गौतम ! **यह आत्मा ज्ञान स्वरूप है । आत्मा ज्ञान से अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है ।**

इस आत्मा को मैं प्रत्यक्ष देख रहा हूँ ! तुम्हें भी यह आत्मा प्रत्यक्ष ही है । सुख-दुःख का ज्ञान, सुख दुःख का बोध, सुख दुःख की अनुभूति तुम्हें प्रत्यक्ष हो रही है । तुम स्वयं अनुभव करते हो कि `मैं सुखी हूँ । मैं दुःखी हूँ ।'

सुख दुःख का अनुभव आत्मा को ही होता है, जड को नहीं ।

तुम्हें कोई सन्मान देता हैं, तब जो खुशी होती है उस खुशी का अनुभव करनेवाली आत्मा ही है ।

`संदेहज्ञान भी एक प्रकार का ज्ञान ही है । उसका तुम प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हो । तो यह आत्मा प्रत्यक्ष ही हुई न !

जो वस्तु प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध हो, उसे सिद्ध करने के लिए अन्य प्रमाणों की आवश्यकता नहीं रहती है । जो प्रत्यक्ष न हो, उसे सिद्ध करने के लिए ही अनुमान आदि प्रमाण देखे जाते हैं ।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(2) `मैं' का त्रैकालिक अनुभव :

`मैं गया । मैं जाता हूँ । मैं जाऊंगा । इस प्रकार भूत-वर्तमान और भविष्य विषयक क्रिया का बोध भी सिर्फ आत्मा को ही होता हैं, क्योंकि आत्मा का अस्तित्व त्रिकाल विषयक है । आत्मा भूतकाल में थी, वर्तमान में है और भविष्य काल में भी रहेगी ।

भूत, भविष्य और वर्तमान विषयक निर्देश आत्मा ही कर सकती है । त्रिकाल विषयक अनुभव शरीर नहीं कर सकता हैं, क्योंकि मृत्यु होने के बाद भी शरीर का अस्तित्व होता है, परंतु उसे अपने अस्तित्व का बोध नहीं होता है ।

`मैं का अनुभव यदि शरीर को होता तो मृत्यु के बाद भी शरीर को `मैं' का अनुभव होता, परंतु यह अनुभव नहीं होता है । मैं का अनुभव आत्मा को ही होता है, शरीर को नहीं । (क्रमशः)

प्रेरक कहानियाँ

लेखक :
प.पू.आचार्यदेव
श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

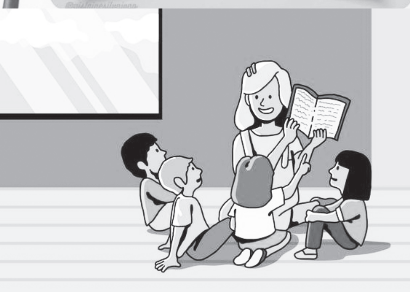

174. किसका नाम अमर रहा है ?

कोटिशिला पर लिखे किसी के नाम को मिटाकर काकिणी रत्न से अपना नाम लिखने वाले भरत महाराजा की आंखों में आंसू आ गये ! अहो ! इस शिला पर नाम लिखने के लिए इंच भर की भी जगह नहीं बची है, क्या इसी नाम के लिए मैंने जगत् को रक्त रंजित किया ? कल मेरा भी नाम कोई मिटा देगा !

175. प्रयत्न से सिद्धि

राज्य की प्राप्ति के बाद किसी ने कुमारपाल को मेघ की उपमा दी ! तब कुमारपाल ने कहा **''अहो ! मुझे मेघ की उपम्या ठीक दी है ।''** यह सुनकर एक मंत्री ने मुंह नीचा कर दिया । कुमारपाल ने हकीकत पूछी तो उसने सत्य बात कह दी कि आपने जो उपम्या शब्द कहा, वह गलत है, सही प्रयोग-उपमा होगा । यह सुनकर कुमारपाल ने 70 वर्ष की उम्र में सिद्ध हेम व्याकरण पढ़ा और फिर अनेक स्तुतियाँ आदि की रचना भी की ।

176. अंतराय से अंतराय

धान्यपुर में एक ब्राह्मण रहता था । राजा द्वारा उसे 500 खेतों का अधिकारी बनाया गया । एक बार कृषको के लिए भोजन व बैलों के लिए चारा आने पर भी उनका शोषण करते हुए जबरदस्ती उन्हें अपने खेत पर काम करवाया ! भोजन के इस अंतराय कर्म के कारण कृष्ण महाराजा के पुत्र ढंढण मुनि को छह मास तक स्वलब्धि से भोजन प्राप्त नहीं हुआ ! तत्पश्चात् कृष्ण महाराजा के प्रभाव से लड्डू मिले, ऐसा जानकर लड्डू को परठते-परठते केवलज्ञान हो गया ।

177. दीर्घदर्शिता

नगर में प्रतिदिन चोरी होती थी ! राजा ने घोषणा करवाई-जो चोर को पकडेगा उसे कश्मीरी धोती का इनाम दिया जाएगा । एक रात चोर ने एक शेठ के घर में पीछवाडे से प्रवेश किया, तब शेठ ने चोर का गला काट दिया । जमादार को देखा, तो उसे चोर के शव को देकर राजा को सौप दिया । राजा ने जमादार को कश्मीरी धोती दी !

शेठानी ने पूछा यह भूल क्यों की ?

शेठ-अरे ! उस धोती के गीत तो आगे गाये जायेंगे । तीन दिन बाद ही दूसरे चोर के द्वारा जमादार की हत्या कर दी गई । उसकी पत्नी क्रंदन करने लगी !

शेठ ने शेठानी को कहा-यह है कश्मीरी धोती का परिणाम ।

178. विश्वास घात

जंगल में मनुष्य के पीछे बाघ पडा था ! बाघ से बचने के लिए मनुष्य पेड पर चढ़ गया । बाघ ने बंदर को कहा-इसे फेंक दो ! बंदर ने कहा–'यह मेरे विश्वास से आया है, अत: मैं इसकी रक्षा करुंगा । बाघ वही बैठा रहा !

रात को बंदर सो गया, तब बाघ ने मनुष्य को कहा–इसे फेंक दोंगे तो तुम्हें छोड दूंगा । 'तत्काल मनुष्य ने बंदर को नीचे फेंक दिया ! बंदर डाली पकडकर रुक गया । उसे मानव की विश्वासघातता का पता चल गया ।'

179. अन्तर के द्वेष की अभिव्यक्ति

एक दिन गौतम बुद्ध वृक्ष नीचे बैठे थे । एक आदमी ने आकर उन्हें बहुत गालियाँ दी और अंत में उनके ऊपर थूंक दिया । बुद्ध ने उसे अपनी चादर से पोछ लिया और कहा-कुछ और कहना है ? वह आदमी तो हैरान हो गया और चला गया ।

पास में बैठे आनंद भिक्षु को गुस्सा आ गया, उसने कहा-''**यह आप क्या कर रहे है ? उसने आपके उपर थूंका और आप कहते हैं कुछ और कहना है ।**''

बुद्ध ने उसे समझाते हुए कहा, वह कुछ कहना चाहता है, परन्तु उसके पास शब्द थे थोडे, अत: उस भाव को थूंक कर कह रहा था !

वह आदमी तो बुद्ध को शत्रु मान रहा था, परन्तु उसे शत्रुता नहीं मिली । दूसरे ही दिन वह शिष्य बन गया ।

180. पाने के पूर्व आवेश छोडो !

एक जर्मन विचारक मिलने के लिए एक संन्यासी के पास गया । जल्दी में होने से जूतें जहाँ-तहाँ उतारकर दरवाजें को धक्का मारा और जाकर बोला–''मैं जल्दी में हूँ, कुछ पूछने आया हूँ...!''

संन्यासी ने कहा तुमने दरवाजे व जूतें के साथ दुर्व्यवहार किया है, अत: उनसे क्षमा मांग कर आओ !

वह विचारक यह सुनकर हैरान हो गया । उसे यह पागलपन लगा, परन्तु संन्यासी ने कहा अभी जूतें और दरवाजें के साथ भी व्यवहार नहीं सिखा है तो आदमी के साथ कैसा व्यवहार करोंगे ?

तुरन्त वह दरवाजे के पास गया और क्षमा मांगी, परन्तु उस समय उसे एक शांति का अनुभव हुआ ।

उसने कहा, 'बाद में मुझे ख्याल आया कि इतने क्रोध और आवेश में मैं सत्य को सुनता भी क्या और समझता भी क्या ? बाद में वह सत्य को सरलता से पा सका ! (क्रमश:)

समाधि के बाधक

वैराग्य दीप हृदय प्रदीप

लेखांक-31

विवेचनकार :– **मरुधर रत्न पू.आचार्य देव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

नवोदित लेखक :– **मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.**

विदन्ति तत्त्वं न यथास्थितं वै, सङ्कल्पचिन्ताविषयाकुला ये ।
संसारदुःखैश्च कदर्थितानां, स्वप्नेऽपि तेषां न समाधिसौख्यम् ।।31।।

शब्दार्थ

विदन्ति=वे सब जानते है, **तत्त्वं=**वास्तविकता को, **न=**नहीं, **यथास्थितं=**जैसा है वैसा, **वै=**पाद पूर्ति, **सङ्कल्पचिन्ताविषयाकुला=**संकल्प, चिन्ता, विषय आदि की आकुलता, **ये=**जो सभी, **संसार-दुःखैश्च=**और संसार के दुःखों से, **कदर्थितानां=**पीडितो को, **स्वप्नेऽपि=**स्वप्न में भी, **तेषां=**उनको, **न=**नहीं है, **समाधिसौख्यम्=**समताजन्य सुख का भाव ।

गाथार्थ

जो व्यक्ति वास्तविक तत्त्वज्ञान को नहीं जानते है, जो संकल्प-चिन्ता, विषय आदि की आकुलता-व्याकुलता से ग्रस्त है तथा जो संसार के दुःखों से पीडित है उनको स्वप्न में भी समता जन्य सुख का भाव प्राप्त नहीं हो सकता है ।

विवेचन

संसार में रहते हुए यदि मोक्ष सुख का आस्वाद लेना हो तो उसके लिए सिवाय समाधि और दूसरा कुछ भी नहीं चाहिए । वास्तव में देखा जाय तो मोक्ष मात्र एक स्थान विशेष है, जो समाधि भाव के फल स्वरूप संसारी जीव को कर्म बंधन से छूटने पर प्राप्त होता है । जब तक उस स्थान की प्राप्ति हो तब तक इस संसार में मोक्ष सुख का आस्वाद पाने का यदि कोई उपाय है तो वह है समाधि भाव । ग्रंथकार श्री इस श्लोक में समाधिभाव में बाधक तीन भावों का निर्देश कर रहे है ।

1) तत्त्वज्ञान का अभाव । 2) संकल्प, चिन्ता, विषय आदि की आकूलता ।

3) संसार में दु:ख की पीडा ।

इन तीन भावों से मन जब तक व्याप्त है तब तक स्वप्न में भी समाधिभाव की प्राप्ति होना शक्य नहीं है । समाधि भाव पाने के लिए इन तीनों भावों से मुक्ति पाना आवश्यक है ।

समाधि भाव

आत्मा का मूल स्वभाव समाधि भाव है । समाधि अर्थात् न राग के पक्ष में रहना, न ही द्वेष के पक्ष में रहना । समाधि भाव को दो उदाहरण से समझते है–1) तराजू के दोनों पलडे जब खाली होते है अथवा समान भार से भरे होते है तब उसकी सुई एकदम केन्द्र में स्थिर हो जाती है । परंतु ज्योंही किसी एक पडले में वजन बढ या घट जाता है त्योंही दूसरा पलडा भी नीचे या ऊपर हो जाता है और उसी के साथ उसकी सुई भी अस्थिर हो जाती है । वैसे ही राग-द्वेष के अभाव में आत्मा अपने आत्मिक स्वभाव में रहती है परंतु जैसे ही मन में राग-द्वेष भाव पैदा होते है, समाधि भाव खंडित हो जाता है । तराजु के दोनों पलड़े राग-द्वेष के प्रतिक है, जब ये दोनों पलडे खाली हो, अर्थात् आत्मा राग-द्वेष से सर्वथा मुक्त हो तब आत्मा अपने परम समाधि भाव में स्थिर हो जाती है ।

अथवा 2) जैसे तालाब का पानी स्थिर और शांत होने पर उसमें हमें अपना प्रतिबिम्ब दिखाई पडता है, परन्तु ज्योंही उस पानी में कोई कंकड़ डालता है, वह पानी हिलने लगता है और उसकी स्थिरता नष्ट हो जाती है । उस पानी की प्रतिबिम्ब को ग्रहण करने की योग्यता नष्ट हो जाती है । वैसे ही जब आत्मा अपने स्वभाव में स्थिर और शांत होती है तब आत्मा समाधि भाव को प्राप्त कर लेती है । परन्तु ज्योंही राग-द्वेष रुपी कंकड उसमें गिरता है, आत्मा के अध्यवसाय में आन्दोलन पैदा हो जाते है और आत्मा अपने समाधि भाव से चलित हो जाती है ।

आत्मा की पूर्णता तो मोक्ष में है । जहाँ आत्मा अपने पूर्ण स्वरुप को प्राप्त कर सदा आत्मिक आनंद में लीन बनी हुई रहती है । वहाँ न राग है, न द्वेष है, न अनुकूलता है, न प्रतिकूलता है, न शत्रु है, न मित्र है, न हर्ष है, न शोक है । सभी प्रकार के द्वन्द्व से मुक्ति है । ऐसी मुक्ति और समाधि हमारा लक्ष्य है । संसार में रहते हुए भी यदि राग-द्वेष के निमित्त मिलने पर हम उससे विचलित हुए बिना रहे तो यहाँ इस संसार में रहते हुए भी मोक्ष के सुख का आस्वाद अवश्य कर ही सकते है ।

तत्त्वार्थाधिगम और प्रशमरति जैसे 500 ग्रंथों की रचना करनेवाले वाचकवर्य श्री उमास्वातिजी महाराजा **प्रशमरति** ग्रंथ में कहते है–

स्वर्गसुखानि परोक्षाण्यत्यन्तपरोक्षमेव मोक्ष सुखम् ।
प्रत्यक्षं प्रशमसुखं, न परवशं न व्ययप्राप्तम् ।।237।।

निर्जित मदमदनानां, वाक्कायमनोविकाररहितानाम् ।
विनिवृत्तपराशानामिहैव मोक्षः सुविहितानाम् ।।238।।

अर्थात्–स्वर्ग के दिव्य सुख तो परोक्ष है और मोक्ष का प्रशम सुख तो अत्यंत परोक्ष है । प्रशम सुख प्रत्यक्ष है, न तो वह परवश है न ही नाशवंत है ।

जिन्होंने मान और काम को जीत लिया है, जो मन-वचन-काया के विकारों से मुक्त है, जो पर पदार्थों की आशाओं से निवृत्त हो चुके है, ऐसे शास्त्रानुसार जीवन जीने वाले सुविहित मुनिओं के लिए यहीं पर मोक्ष है ।

धर्म के मर्म और संसार के भ्रम को जानने के बाद कौन व्यक्ति समाधि सुख के रसास्वाद को पाना नहीं चाहेगा ? परंतु इसकी प्राप्ति आसान नहीं है । शीघ्रघाति जलचर प्राणियों से भरे समुद्र को दोनों भुजाओं के बल से तैरना मुश्किल है, परंतु कोई शुरवीर इस मुश्किल कार्य को आसान बना दे तो भी समाधि सुख की प्राप्ति और स्थिरता पाना आसान नहीं है ।

समाधि भाव की प्राप्ति सामायिक धर्म से है । सामायिक का अर्थ बताते हुए याकिनी महत्तरा सुनू श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी म.सा. ने अष्टक प्रकरण में कहा है–

सामायिक च मोक्षांगं परंसर्वज्ञभाषितं ।

वासीचन्दनकल्पाना-मुक्तमेतन्महात्मनाम् ।।

अर्थात्– सामायिक को सर्वज्ञ परमात्मा ने मोक्ष का अंग बताया है । यह सामायिक वासीचन्दन कल्पवाले महात्माओं को कही गई है ।

वासीचन्दन कल्प अर्थात्–शरीर के एक भाग में कोई वसूले से छेद करे और दूसरे भाग में कोई चन्दन का विलेपन करे, इन दोनों परिस्थितओं में न किसी पर राग करना और न किसी पर द्वेष करना ।

इतनी उच्च कक्षा की समता पाने के लिए दिल्ली दूर है, परंतु दिल्ली दूर है कहकर हम अपनी समाधि साधना से डर जाए तो अपना लक्ष्य सिद्ध नहीं हो सकता है । करोड रुपयों की आशा वाले को भी शुरुवात तो पाई-पाई से ही करनी पडती है । उसी प्रकार समाधि भाव की पराकाष्ठा पाने के लिए छोटी-छोटी बातों में समताभाव पाने के लिए प्रत्यशील तो हमें बनना ही पडेगा ।

ग्रंथकारथी इस श्लोक के द्वारा हमें समाधिभाव की प्राप्ति में जो कोई भी आपत्तियाँ है, उन सभी का निर्देश कर रहे है–

1) तत्त्वज्ञान का अभाव–समाधिभाव का भंग राग-द्वेष के कारण होता है और राग-द्वेष का मुख्य कारण तत्त्वज्ञान का अभाव है । तत्त्वज्ञान यानी वास्तविक ज्ञान । जो जैसा है उसे वैसा जानना और मानना । इस पूरे विश्व में मुख्य रुप से दो ही तत्त्व है–जीवतत्त्व और जडतत्त्व । जीव और जड दोनों का स्वभाव भिन्न है । दोनों एक दूसरे से विपरीत है । जीव कभी जड नहीं बनता और जड कभी जीव नहीं बनता । जीव ओर जड का जो भी सम्बन्ध है वह सदा रहने वाला नहीं । एक न एक दिन जीव और जड के सम्बन्ध का अवश्य अंत होता है । फिर भी जीव और जड के भिन्न-भिन्न स्वभाव होने से जीव के प्रति मैत्रीभाव और जड के प्रति विरक्ति का भाव होना चाहिए ।

व्यक्ति जब तक इस जीव और जड के तत्त्वज्ञान से अज्ञात है तब तक वह जड से संबंध जोड़कर उसी में आसक्त रहता है । आसक्त व्यक्ति जड पदार्थ की आसक्ति के कारण कभी शांत नहीं रह सकता है ।

2) संकल्प, चिन्ता, विषय आदि की आकुलता–संकल्प अर्थात् मन में होनेवाले राग-द्वेष के अध्यवसाय । चिन्ता अर्थात् इच्छित कार्य के न होने और अनिच्छित कार्य के होने पर उसके विषय में अयोग्य विचार करना, विषय अर्थात् पांच इन्द्रिय के अनुकुल और प्रतिकूल पदार्थ, इनसे होनेवाली आकुलता हमें समाधि भाव पाने नहीं देती है । मन में जब जड पदार्थों के प्रति आसक्ति का भाव रहता है तब, जब तक वह पदार्थ प्राप्त न हो अथवा प्राप्त होने के बाद वह पदार्थ हमसे दूर न हो इस प्रकार के संकल्प विकल्पों का बवंडर मन में हमेशा चलता ही रहता है । ये संकल्प-विकल्प आर्तध्यान स्वरुप है, जो हमें कभी शांत चित्त होने नहीं देते है ।

3) संसार के दु:ख की पीडा–संसार में चारों ओर आधि-व्याधि और उपाधि की भरमार है । (मानसिक पीडा=आधि, शारीरिक पीडा=व्याधि और बाहर से आनेवाली पीडाएँ=उपाधि) क्षणिक सुख को पाने की इच्छा और आशा में संसारी जीव भयंकर पीडाएँ सहते रहता है । इस पीडा के कारण जीवन में शांति और समाधि की प्राप्ति असंभव हो जाती है ।

आत्म स्वभाव में रमणता प्राप्त करने में बाधक तत्त्वज्ञान का अभाव, संकल्प चिन्ता और सांसारिक दु:ख की पीडा को समझाता अंतिम केवली श्री जंबुस्वामीजी द्वारा प्रभव चोर को बताया गया मधुबिन्दु का दृष्टांत–

मधुबिंदु

सूर्यपुर नाम का एक विशाल नगर था, जहाँ प्रेमदत्त नाम का धनाढ्य श्रेष्ठी रहता था । श्रेष्ठी के प्रियदत्त और महादत्त नाम के दो पुत्र थे । नवयौवन को प्राप्त दोनों भाइयों को धन कमाने की इच्छा हुई । पिता के आग्रह से महादत्त ने सूर्यपुर नगर में अपना व्यापार प्रारम्भ किया, परन्तु प्रियदत्त पिता की आज्ञा का उल्लंघन करके भी धनार्जन के लिए विदेश जाने के लिए तैयार हो गया । पिता ने अनिच्छा से प्रियदत्त को सम्मति दी । एक दिन वह धन-सामग्री लेकर अपने नगर से निकल पड़ा ।

नगर की सीमा पार करने के बाद आगे बढ़ता हुआ वह एक भयानक जंगल में आ पहुँचा । आगे चलते-चलते उसे दो लुटेरे मिले । उन लुटेरों ने उसको लूट लिया । वन के फलों का आहार करता हुआ धीरे-धीरे वह आगे बढ़ा । वन-मार्ग अत्यंत भयानक था, चारों ओर जंगली पशुओं की भयानक गर्जनाएं सुनाई देती थी ।

अचानक ही एक हाथी ने प्रियदत्त को जाते हुए देखा । प्रियदत्त को देखते ही वह हाथी उसकी ओर भागा । हाथी की भयंकर व रौद्र चिंघाड़ सुनकर प्रियदत्त घबरा गया । वह भी अपने प्राण बचाने के लिए वेग से भागा । इस भयंकर आपत्ति में उसे कोई शरण देने वाला नहीं था ।

आखिर उसे कुछ ही दूरी पर वट-वृक्ष दिखाई दिया । वह उस ओर भागा । वट-वृक्ष के नीचे एक कुआं था, कुएं की दीवार पर पैर रखकर उसने एक डाली पकड़ ली और दोनों हाथों से लटकने लगा । इधर हाथी भी दौड़ता हुआ वट-वृक्ष के पास आ पहुँचा, बीच में कुआँ होने से हाथी प्रियदत्त को पकड़ न सका । शिकार न मिलने से हाथी वट-वृक्ष को जड़ से ही उखाड़ने का प्रयत्न करने लगा ।

उस कुएँ में चार सर्प और एक अजगर था, जो तीव्र फूत्कार कर प्रियदत्त को डँसने के लिए सजग थे । वृक्ष के ऊपर मधु-मक्खियों का छत्ता था । हाथी जब वृक्ष को हिलाता, तब छत्ते की मक्खियाँ उड़कर प्रियदत्त को डंक देती थीं । जिन दो डालियों के आधार पर प्रियदत्त लटका हुआ था, उन दो शाखाओं पर सफेद व श्याम रंग के दो चूहे थे, जो उन डालियों को काट रहे थे । वृक्ष के हिलने पर मक्खियाँ उड़ती थीं, उस शहद के छत्ते में से नीचे गिरती हुई दो-चार शहद की बूंदें प्रियदत्त के मुख में गिर पड़ीं । उसे बड़ा आनंद आया । कुछ समय बाद एक देव, विमान में बैठकर उस मार्ग से निकला, प्रियदत्त की इस दुर्दशा देखकर देव को दया आ गई ।

देव ने कहा, ''हे प्रियदत्त ! चल, मैं तुझे अपने स्थान पर पहुँचा देता हूँ !''

प्रियदत्त ने कहा-''तुम्हारी बात सच है, मगर अभी-अभी मैंने शहद के दो-चार बूंदे चखी है, शहद बहुत ही मधुर है, अतः दो-चार बूंदें मुझे और चखने दो, उसके बाद मैं आऊंगा ।''

प्रियदत्त की बात सुनकर देव वहाँ से चला गया । कुछ ही दिनों बाद देव पुनः आकर बोला, परन्तु प्रियदत्त ने पुनः वही जवाब दिया । देव समझ गया कि यह बेचारा मधु में लुब्ध हो गया है, अतः नहीं समझ सकता है । पुनः देव वहाँ से चल पड़ा । अंत में डालियों के कटने से प्रियदत्त कुएं में जा गिरा !

कथा का उपनय : इस दृष्टांत में **प्रियदत्त** संसारी जीव है । **भयंकर वन**, संसार है । **हाथी**, मृत्यु है । **कुआँ** दुर्गति का प्रतीक है । कुएँ में चार सर्प और अजगर काम-क्रोध्र-मद-लोभ और मोह के द्योतक हैं । सफेद व श्याम रंग के चूहें दिन व रात अथवा शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष के प्रतीक हैं । मक्खियों का छत्ता विषयों का प्रतीक है । मक्खियों के उड़ने से जो शहद की बूंदें गिरती हैं-वे संसार के सुख की प्रतीक हैं और मक्खियों के दंश आधि-व्याधि और उपाधि के प्रतीक हैं । दोनों शाखाएँ आयुष्य की प्रतीक हैं, जिसे दिन व रात रूपी चूहें काट रहे हैं ।

विमान में बैठा देव सद्गुरु का प्रतीक है और देव का वचन धर्मोपदेश का प्रतीक है । देव को प्रियदत्त का प्रत्युत्तर यह संसारी जीव की मूर्च्छा का प्रतीक है ।

स्पष्ट है कि क्षणिक व अल्प सुख में लुब्ध बना संसारी जीव अपने भावी का विचार नहीं करता है और विषयों में लुब्धता के कारण मरकर दुर्गति प्राप्त करता है ।

वास्तव में संसारी जीवों की यही स्थिति है । उन्हें आत्मा की बातें भ्रम रूप लगती हैं । तत्त्वज्ञान के अभाव में वास्तविक सत्य को वे पहिचान नहीं पाते हैं । आत्मा का सुख शाश्वत, निरपेक्ष और अनंत है, जिसकी प्राप्ति के लिए आत्मा की स्वभाव दशा को प्राप्त करना पड़ता है । आत्म-स्वभाव में रमणता के लिए सर्व प्रथम आत्मा में रहे दुर्गुणों को मूल से उखाड़ना चाहिए और गुण-प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील बनना चाहिए ।

शांत सुधारस

जीवन में शांति का उपाय

विवेचनकार : **प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

अप्रिय वृद्धावस्था

मनुष्य के मस्तक पर अत्यन्त सुन्दर दिखने वाले काले बालों को जरावस्था सफेद बना देती है और शरीर को रसहीन (नीरस) बना देती है, ऐसी जरावस्था को रोकने में कौन समर्थ है ?

सभी को यौवनावस्था प्रिय है, वृद्धावस्था किसी को प्रिय नहीं है । मस्तक के श्याम केश सुन्दर लगते हैं, किन्तु सफेद केश किसी को प्रिय नहीं हैं । वृद्धावस्था के आगमन के साथ ही मनुष्य के काले केश सफेद हो जाते हैं और उसका शरीर निस्तेज हो जाता है । यौवन की चाल भी बदल जाती है और व्यक्ति बड़ी कठिनाई से लकड़ी के सहारे धीरे-धीरे एक-एक कदम चलता है । दाँत गिर पड़ते हैं, लेकिन स्वाद जाता नहीं है । खाने की इच्छाएँ बनी रहती हैं ।

वृद्धावस्था शरीर को जीर्ण-शीर्ण बना देती है । जीवन नीरस बन जाता है ।

मनुष्य ऐसी जरावस्था का शिकार बनना नहीं चाहता है, परन्तु उस जरावस्था को रोकने में कौन समर्थ है ? अर्थात् कोई समर्थ नहीं है ।

रोग सहित काया

मानव देह जब तीव्र व्याधियों से ग्रस्त बन जाता है, तब उसका सहायक कौन होता है ? ग्रहण की पीड़ा चन्द्रमा अकेला भोगता है, उस समय उसके साथ कोई हिस्सा नहीं बँटाता है ।

आकाश में चन्द्रमा के साथ अनेक तारागण भी होते हैं, परन्तु जब चन्द्रग्रहण होता है, तब उससे चन्द्र ही ग्रसित होता है अन्य तारागण नहीं । इसी प्रकार धन-वैभव आदि की समृद्धि होने पर भी जब शरीर रोगों से घिर जाता है, तब स्वयं को ही पीड़ा का अनुभव करना पड़ता है, उस पीड़ा में कोई सहायक नहीं हो पाता है ।

आप समृद्ध हैं तो आपकी बीमारी के निवारणार्थ बड़ी-बड़ी फीस लेने वाले डॉक्टर बुलाए जा सकते हैं, किन्तु दर्द की पीड़ा तो स्वयं को ही भोगनी पड़ती है । डॉक्टर या स्वजन उस दर्द में भागीदार नहीं बन सकते हैं ।

अनाथी मुनि गृहस्थ अवस्था में अत्यन्त ही समृद्ध थे । किसी भी प्रकार के धन-वैभव-स्वजन-परिवार की उन्हें कमी नहीं थी, किन्तु जब उनके शरीर में वेदना पैदा हुई, तब उस वेदना को बाँटने वाला कोई नहीं था । संसार का यह स्वभाव है । सुख में भागीदार बनने के लिए सब तैयार हैं, किन्तु दु:ख में भागीदार बनने के लिए कोई भी तैयार नहीं । सभी सुख के साथी हैं, दु:ख आने पर दूर-सुदूर ही भागने वाले हैं ।

अनाथी मुनि ने अपनी अनाथता का साक्षात् अनुभव किया और यह संकल्प लिया कि मेरी बीमारी ठीक हो जाए तो मैं संसार का त्याग कर दीक्षा अंगीकार कर लूंगा । दूसरे ही दिन वे स्वस्थ हो जाते हैं और अपने संकल्पानुसार संसार का त्याग कर दीक्षा अंगीकार कर लेते हैं ।

सच्चे शरण्य कौन ?

हे पुण्यात्मन् ! चार अंग स्वरुप (अरिहंतादिक का) शरण स्वीकार कर । ममता के संग का त्याग कर और शिवसुख के निधानभूत शांतसुधारस का पान कर ।

संसार में जीवात्मा की सर्वत्र अशरण दशा है । उसी अशरण दशा से मुक्त होने के लिए **पूज्य उपाध्याय श्री विनयविजयजी महाराज** तीन उपाय बतला रहे हैं-

(1) चतु:शरण गमन । (2) ममता का त्याग । (3) शान्त सुधारस का पान ।

1. **चतु:शरणागति :-** इस विश्व में जीवात्मा के लिए शरण्यभूत चार ही पदार्थ हैं-(1) अरिहन्त (2) सिद्ध (3) साधु और (4) केवली प्ररूपित धर्म ।

अरिहन्त परमात्मा तीर्थ की स्थापना कर भव्य जीवों के लिए मोक्षमार्ग का प्रदर्शन करते हैं । अत: आद्य उपकारी वे ही हैं, वे स्वयं संसारसागर से पार हो चुके हैं और शरणागत को भी भवसागर से पार कर देते हैं, अत: वे अवश्य शरण योग्य हैं ।

सिद्ध भगवान चौदह राजलोक रुप इस संसार के अग्र भाग पर स्थित हैं, जो अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य आदि आत्म-गुणों के भण्डार हैं । सिद्ध भगवन्तों ने आत्मा के पूर्ण स्वरुप को प्राप्त कर लिया है । अरिहन्त परमात्मा के लिए भी वे ध्येयस्वरुप हैं । वे अपनी स्थिति मात्र से मुमुक्षु आत्माओं पर महान् उपकार करते हैं ।

तीर्थंकर के अभाव में शासन की धुरा को वहन करने वाले आचार्य भगवन्त ही हैं । आचार्य, उपाध्याय और साधु भगवन्त तीनों का जीवन उद्देश्य आत्मा के शुद्ध स्वरुप को प्राप्त करना है । वे ग्रामानुग्राम विचरण कर भव्य जीवों को धर्मोपदेश प्रदान करते हैं और सभी को मोक्षमार्ग में आगे बढ़ाते हैं । उनकी शरणागति से आत्मा में सुषुप्त साधुता जागृत होती है ।

केवली प्ररुपित धर्म ही यथार्थ और मोक्षसाधक है । दुनिया में धर्म की बातें तो बहुत लोग करते हैं, परन्तु यथार्थ धर्म जिनेश्वर प्ररुपित ही है । उस धर्म की शरणागति के स्वीकार से आत्मा उत्थान के मार्ग पर आगे बढ़ती है ।

(क्रमश:)

शासन प्रभावना के समाचार

मरुधर रत्न, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, पूज्यपाद **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** आदि ठाणा 5 एवं सा. श्री समर्पणलीनाश्रीजी आदि ठाणा-4 का शुभ निश्रा में श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ मालदास स्ट्रीट-उदयपुर के तत्त्ववधान में श्री वासुपूज्य स्वामी जिनालय-महावीर विद्यालय-चित्रकूट नगर-उदयपुर में भद्रंकर परिवार द्वारा आयोजित महामंगलकारी उपधानतप की आराधना बडे ही उत्साह और उल्लास के साथ चल रही है ।

प्रतिदिन उपधान तप के आराधकों की सुबह-शाम की क्रिया एवं प्रात: 10.15 से 11.30 बजे तक प्रेरणादायी प्रवचन **पूज्य आ.श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** द्वारा किया जाता है । 100 खमासमण एवं ऋषीमंडल स्तोत्र श्रवण पूज्य मुनिराजश्री शालिभद्रविजयजी म.सा. द्वारा कराया जाता है । प्रतिदिन प्रात: 9.45 से 10.15 तक एवं उपवास के दिन दोपहर 3.00 से 4.00 तक प्रवचन मुनि श्री स्थूलभद्रविजयजी द्वारा किया जाता है ।

दि. 10 अक्टूबर को दो आराधकों का प्रवेश हुआ ।

दि. 14 अक्टूबर को बाल मुनिराज श्री विमलपुण्य-विजयजी म.सा. के श्री उत्तराध्ययन सूत्र के योगोद्वहन में मंगल प्रवेश हुआ । साथ ही दो आराधकों का उपधान तप में भी प्रवेश हुआ । आज पूज्य आचार्यदेव श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. के दीक्षा दाता वर्धमान तपोनिधि पूज्यपाद **पंन्यास प्रवर श्री हर्षविजयजी म.सा.** की पुण्यतिथि निमित्त गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ । जालोर से पधारे तेजपालभाई ने गुरुभक्ति गीत एवं पूज्यश्री का परिचय दिया । तत्पश्चात् पूज्य आचार्य भगवंत ने गुणानुवाद करते हुए उनपर हुए पूज्य पंन्यास प्रवर श्री हर्षविजयजी के उपकारों का स्मरण करते हुए स्मरणांजलि प्रदान की ।

दि. 15 अक्टूबर को प्रवचन दरम्यान उपधान तप के सभी तपस्विओं ने पूज्यश्री को प्रदक्षिणा देते हुए गुरु पद पद स्थापित किया ।

दि. 18 अक्टूबर को दो आराधकों का मंगल प्रवेश हुआ ।

दि. 20 अक्टूबर को प्रात: काल के शुभ मुहूर्त में मोक्ष माला परिधान करने वाले आराधकों का एवं दो नए पधारे आराधकों का दूसरे अठारिये में मंगल प्रवेश हुआ । फूलो से सजी नाण में विराजमान चार परमात्मा के सन्मुख तीन प्रदक्षिणा देकर मंगल प्रवेश की क्रिया की । 18-18 दिनों तक जीवन में प्रथम बार एकान्तर उपवास सहित पौषध व्रत के द्वारा विरतिधर्म का आस्वाद प्राप्त कर देव-गुरु की असीम कृपा के प्रत्यक्ष प्रभाव को अनुभव करने वाले आराधकों ने मोक्षमाला प्राप्ति तक की निर्विघ्नतया आराधना के लिए मंगल प्रार्थना की ।

प्रवेश विधि के पश्चात् आज दीपावली पर्व के शुभ अवसर पर प्रात: 9.45 बजे से भाववाही स्तुतिओं के सामूहिक गान के साथ '**प्रभु महावीर निर्वाण कल्याणक भावयात्रा**' का कार्यक्रम हुआ । पूज्य आचार्य भगवंत ने भगवान श्री महावीर स्वामी के जीवन प्रसंगों का रोमांचक वर्णन किया ।

दि. 22 अक्टूबर को वीर संवत् 2552 एवं विक्रम संवत् 2082 के नूतन वर्ष की मंगल प्रभात में प्रात: 7.00 बजे नवस्मरण एवं श्री गौतमस्वामी रास श्रवण स्वरुप मांगलिक का आयोजन हुआ । पूज्यश्री ने इन मंगलपाठों की रचना का इतिहास एवं संक्षेप में महत्त्व समझाते हुए मंगल पाठ किया । बीच में पूज्यश्री द्वारा आलिखित **260 वीं पुस्तक ''समाधि की साधना''** का भव्य विमोचन पुस्तक प्रकाशन के लाभार्थी **मातुश्री चन्दाबेन तेजसिंहजी गोडवाडा**

परिवार एवं **श्री संघ के पदाधिकारी राजेशजी जावरिया, हेमन्तजी सिंघवी, जशवंतसिंहजी सुराणा** आदि के द्वारा किया गया । कार्यक्रम के बाद पधारे हुए सभी महानुभावों की नवकारशी हुई ।

दि. 26 अक्टूबर को ज्ञान पंचमी निमित्त प्रात:9.30 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद सामुहिक रुप से ज्ञान पंचमी का देववंदन हुआ । आज के मंगल दिन पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी म. सा.** को ज्ञान पंचमी की आराधना करते हुए 50 वर्ष पूर्ण हुए ।

चातुर्मास जयोत्सव

दि. 27 अक्टूबर को प्रवचन दरम्यान पूज्यश्री के आगामी चातुर्मास की विनती हेतु 3 बस भरकर श्री जैन संघ-पिण्डवाडा से 150 लोग पधारे । श्री संघ के अध्यक्ष श्री महेशजी सागरमलजी राठोड, कोषाध्यक्ष मनीषभाई रणजीतलालजी, अशोकभाई रायचंदजी, रणजीतभाई छोटालालजी, अशोककुमार छोटालालजी आदि ट्रस्टी गण ने पूज्यश्री को हार्दिक विनती की । प्रत्युत्तर में पूज्यश्री ने वडिल गुरु भगवंतों के आदेशानुसार श्री जैन संघ-पिण्डवाडा की विनती का सहर्ष स्वीकार किया । भद्रंकर परिवार एवं श्री उपधान तप आयोजक समिति द्वारा सभी ट्रस्टीगण का बहुमान किया गया । श्री जैन संघ-पिण्डवाडा की ओर से 50 रुपये की प्रभावना की गई ।

दि. 30 अक्टूबर को प्रात:9.30 बजे बारह व्रत स्वीकार एवं पुद्गल वोसिराने की क्रिया हुई ।

दिव्य संदेश प्रकाशन आयोजित 'महापुरुष भाग-2' (Open Book Exam) ई.सन्. 2025 पर आधारित परीक्षा पत्र परिणाम–Result

क्रम	नाम	शहर	प्राप्तांक	क्रम	नाम	शहर	प्राप्तांक
1.	वंदना बोहरा	अंकलेश्वर	197.5	17.	काजल शाह	वडोदरा	193
2.	हिना नागोरी	उदयपुर	197	18.	नरेन्द्र जैन	रायचुर	193
3.	ईश्वर पटेल	उज्जैन	196.5	19.	हंसा भनावत	उदयपुर	193
4.	तारीका शाह	हिंगोली	196	20.	साध्वी ज्योतिप्रभाजी	भिलवाडा	193
5.	चंद्रा	हैद्राबाद	196	21.	रोडबाई लोढा	वसई	193
6.	ज्योति बी. शाह	मुंबई	195	22.	ममता महेता	बारशी	193
7.	स्नेहल छाजेड	पुणे	195	23.	ज्योति डागा	सुरतगढ	193
8.	टीना जैन	गुण्टुर	194	24.	प्रेमलता जैन	अजमेर	193
9.	देवीलाल कोठारी	केलवा	193	25.	राजकुमार बांटीया	पाली	193
10.	कुसुम फोफलीया	जयपुर	193	26.	यश्वी जैन	सीरसा	193
11.	अल्का गोलेचा	भवानी मण्डी	193	27.	सुनिता जैन	दिल्ही	193
12.	शालीनी भण्डारी	इन्दौर	193	28.	तरुणा महेता	भिलवाडा	193
13.	मनीष बारेता	मानसा	193	29.	निशा परमार	नारसापुर	193
14.	अन्जु जैन	चंडीगढ	193	30.	साधना छाजेड	कराही	193
15.	डॉ. आभा गांधी	चित्तोडगढ	193	31.	प्रेमलता जैन	आनंद	192
16.	नीशा जैन	दुबई	193	32.	रुपल महेता	के.जी.एफ.	192

क्रम	नाम	शहर	प्राप्तांक	क्रम	नाम	शहर	प्राप्तांक
33.	खुशबु भण्साली	चित्रदुर्गा	192	71.	वैशाली सिंगला	जखल मण्डी	189
34.	रीटा महेता	मन्दसौर	192	72.	सोनु मालु	इचलकरंजी	189
35.	भारती बोतरा	मुर्शीबाद	192	73.	राकेश जैन	सुरत	189
36.	इन्दिरा लोढा	असीफाबाद	192	74.	पुष्पा बोहरा	सिंकदराबाद	189
37.	सरोज गोलेचा	राजनंदगांव	192	75.	निशीता जैन	रत्नागिरी	189
38.	श्वेता बोरुडीया	यवतमाल	192	76.	सरला परमार	पुणे	188
39.	रेणु कांकरीया	यवतमाल	192	77.	हर्षा सांखला	प्रतापगढ	188
40.	किरणदेवी शेठीया	बिकानेर	192	78.	सरोज श्रीमाल	रतलाम	188
41.	डॉ. बीना झारोली	वडोदरा	192	79.	विना ओसवाल	कर्जत	188
42.	प्रमिला कीमती	इन्दौर	192	80.	आरती जैन	गंगापुर सिटी	188
43.	चंद्रा बोहरा	रायचुर	192	81.	तारा जैन	इन्दौर	188
44.	सुशीला राका	जलगांव	192	82.	लीला गांधी	वडोदरा	188
45.	प्रमीला पोखरना	धुलिया	192	83.	स्नेह जैन	लुधियाना	188
46.	जागृति शाह	अहमदाबाद	192	84.	हंसाली बोथरा	सावता	187
47.	सरोज संघवी	बैगलोर	192	85.	उगमदेवी जैन	सिकंदराबाद	187
48.	निलम ओसवाल	रत्नागिरी	192	86.	इला लालन	मुंबई	187
49.	प्रियंका धुपिया	सुरत	192	87.	सरोज डागलीया	भिलवाडा	187
50.	अभिलाषा जैन	इन्दौर	191	88.	गुणबालाजी तलेसरा	पाली	187
51.	उषा टाटीया	सिंधखेडा	191	89.	डी. रुपरेखा जैन	चैन्नई	187
52.	नानसी जैन	शिवगंज	191	90.	सरोज बंदी	प्रतापगढ	187
53.	स्वप्ना खातोड	सुरत	191	91.	जयश्री जैन	मुंबई	187
54.	नमीता गांधी	रत्नागिरी	191	92.	रेखा पारेख	राजकोट	187
55.	रजनी सिंगला	जखल मण्डी	191	93.	सिमा संघवी	बल्लारी	187
56.	दर्शना जैन	हीसर	190	94.	नेहा जैन	चौमहेला	187
57.	साध्वी प्रतिभाजी	भिलवाडा	190	95.	रीटा जैन	पुणे	187
58.	सज्जन जैन	शिवगंज	190	96.	आवृत्ति कसवा	मुंबई	187
59.	साधना जैन	पंजाब	190	97.	सुषमा जैन	सिरसा	187
60.	मीना गांधी	जमखण्डी	190	98.	साकक्षी जैन	सिरसा	187
61.	पुजा जैन	धार	190	99.	सुरभी जैन	उज्जैन	187
62.	बबिता जैन	हरीयाना	190	100.	देवीलाल बापना	केलवा	186
63.	साध्वी किरणप्रभा	सुरत	190	101.	मोनिका देशलेहरा	हैद्राबाद	186
64.	संजु गोलेचा	हावरा	190	102.	उषा जैन	इन्दौर	186
65.	आयुषी जैन	दिल्ही	189	103.	चंचलबाई जैन	सिकंदराबाद	186
66.	चित्रा जैन	दिल्ही	189	104.	संतोष जैन	दिल्ही	186
67.	ममता जैन	हावरा	189	105.	मंजु पोखरना	जयपुर	186
68.	बरखा जैन	इन्दौर	189	106.	विद्या पोरवाल	बिजापुर	186
69.	वनिता जैन	इन्दौर	189	107.	उर्वी महेता	राजकोट	186
70.	निर्मला नाहार	चैन्नई	189	108.	शांतिदेवी दोशी	बैंगलोर	186

क्रम	नाम	शहर	प्राप्तांक	क्रम	नाम	शहर	प्राप्तांक
109.	शशि रांका	इन्दौर	186	147.	संगीता महेता	शिवगंज	181
110.	उषा जैन	सिरसा	186	148.	पद्मा जैन	बाली	181
111.	अल्का जैन	सिरसा	186	149.	राधा बोहरा	बैंगलोर	181
112.	रीना मीतल	गंगापुर सिटी	186	150.	पुर्णिमा नायर	पुणे	181
113.	सिमा गांधी	चैन्नई	186	151.	इन्दु जैन	बिजापुर	181
114.	अर्चना श्रीमाल	रतलाम	186	152.	नरेन्द्रकुमार बांठिया	कोलकत्ता	181
115.	आर. इन्दु जैन	इरोड	185	153.	साध्वी कमलप्रभाजी	भिलवाडा	180
116.	उषा जैन	मोहाली	185	154.	रेणुका शाह	अहमदाबाद	180
117.	सिंपली खातोड	भिलवाडा	185	155.	रक्षा गांधी	रत्नागिरी	180
118.	मंजुलाबेन शाह	मैसुर	185	156.	अंजुला नाहर	इन्दौर	180
119.	श्वेता भालगट	रत्नागिरी	185	157.	सोनाली भण्साली	अहमदाबाद	178
120.	कल्पना शाह	अहमदाबाद	185	158.	ज्योत्सना शाह	वडोदरा	178
121.	बीना जैन	दिल्ही	185	159.	शांता लोडाया	करणजा	178
122.	भारती गांधी	मुंबई	185	160.	ममता गुंदेचा	रत्नागिरी	175
123.	रचना सोनी	हिंगोली	185	161.	संगीता ओसवाल	विजयपुर	174
124.	निर्मला बच्छावत	फलोदी	185	162.	पन्नाबेन दोशी	राजकोट	173
125.	किरण छाजेड	इन्दौर	185	163.	श्वेता जैन	दलोत	172
126.	हंसा शाह	मुंबई	185	164.	अनीता श्रीमाल	रतलाम	171
127.	चंदा कोठारी	रत्नागिरी	185	165.	कविता अच्छा	बैंगलोर	170
128.	नेहा रायसोनी	सिंकदराबाद	185	166.	चेतना सुराणा	औरंगाबाद	170
129.	हर्षा ओसवाल	पुणे	184	167.	स्वप्ना गुंदेचा	रत्नागिरी	170
130.	मीनु जैन	लुधियाना	184	168.	इन्द्रा संघवी	शिवगंज	167
131.	पुनम ओसवाल	रत्नागिरी	184	169.	पिंकी जैन	रत्नागिरी	165
132.	मीना गुन्देचा	रत्नागिरी	184	170.	रंजीता गांधी	रत्नागिरी	165
133.	भावना शाह	अहमदाबाद	184	171.	पुजा गुंदेचा	रत्नागिरी	161
134.	दर्शना शाह	मुंबई	184	172.	डिम्पल जैन	भिलवाडा	160
135.	मीना बोथरा	इचलकरंजी	184	173.	रंजना लुंकड	कल्याण	160
136.	मनीष सुराना	चित्तोडगढ	184	174.	प्रदीप ओरा	जाओरा	160
137.	स्मीता जैन	सिरसा	184	175.	रींकु गांधी	रत्नागिरी	156
138.	शारदा ओसवाल	बिजापुर	184	176.	रेखा बोहरा	बेग	156
139.	आर. शोभा गुंदेचा	चैन्नई	184	177.	पिंकी ओसवाल	कोल्हापुर	156
140.	उर्मिला जैन	बैंगलोर	183	178.	लता जैन	बैंगलोर	155
141.	कल्पज्ञाश्रीजी	लुधियाना	183	179.	हीराचंद जैन	मुंबई	153
142.	रामा कोठारी	रतलाम	183	180.	अनीता महेता	जोधपुर	151
143.	रेनुका जैन	इन्दौर	182	181.	उषा जैन	नीमच	146
144.	शिल्पा शाह	करनाड	182	182.	ललिता जैन	नलखेडा	131
145.	दीपल वीरा	मुंबई	182	183.	मधुबेन विनोदजी	चैन्नई	130
146.	शशि जैन	गंगापुर सिटी	182				

RNI No. MAHHIN/2000/00860 • Postal Reg. No. MCS/125/2024-26 • WPP License No. MR/TECH/WPP-285/South/2024-26
Posted at Patrika Channel STG Office Mumbai-1 • Date of Pub. 12 Day of every month • Posting Date 15th of every month

चातुर्मास जयोत्सव दि. 27-10-2025

उपस्थित जनमेदिनी

लाभार्थी बहुमान

If undelivered please return to : DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing--East Bay,
Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002.

To,

From :

Published and Printed by : SURENDRA JAIN on behalf of DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Printed at : SOMANI PRINTING PRESS, Gala No. 3-4, Amin Ind. Estate, Sonawal Cross Road No. 2, Goregaon (E), Mumbai-400 063. and Published from : Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing--East Bay, Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002. EDITOR:SURENDRA JAIN